-: कारक -प्रकरणम् :-

⇒ **'कारक' शब्द की व्युत्पत्ति एवम् अर्थ** ⇒

'कारक' शब्द 'कृ' धातु में 'ण्वुल' प्रत्यय के जुड़ने से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है- 'करने वाला।'
व्याकरण ग्रन्थों में 'कारक' शब्द की व्युत्पत्ति के लिए निम्नलिखित सूत्र लिखे गए हैं। यथा -

(i) सूत्र → " क्रियाजनकं कारकम् "
(ii) सूत्र → " क्रियाजनकत्वं कारकम् "
(iii) सूत्र → " क्रियां करोति इति कारकम् "

अर्थात् ऐसे शब्द जिनका क्रिया के साथ कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित होता है, वे कारक कहलाते हैं।

जैसे:- " हे मनुष्याः! नरदेवस्य पुत्रः जयदेवः स्वहस्तेन कोषात् निर्धनेभ्यः ग्रामे धनं ददाति।"

प्रश्न		उत्तर
कः ददाति ?	→	पुत्रः जयदेवः ददाति।
किं ददाति ?	→	धनं ददाति।
केन ददाति ?	→	स्वहस्तेन ददाति।
कस्मै/केभ्यः ददाति ?	→	निर्धनेभ्यः ददाति।
कस्मात् ददाति ?	→	कोषात् ददाति।
कुत्र ददाति ?	→	ग्रामे ददाति।

इस वाक्य में प्रयुक्त 'पुत्रः जयदेवः, धनं, स्वहस्तेन, निर्धनेभ्यः, कोषात्, ग्रामे' शब्दों का तो 'ददाति' क्रिया के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित हो रहा है, अतः इनको यहाँ 'कारक' माना जायेगा।
इसी वाक्य में प्रयुक्त 'हे मनुष्याः!' एवं 'नरदेवस्य' शब्दों का 'ददाति' क्रिया के साथ कोई सम्बन्ध स्थापित नहीं हो रहा है, अतः इनको यहाँ 'कारक' नहीं माना जायेगा।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

⇒ कारकों की संख्या ⇒

"कर्ता कर्म च करणं, सम्प्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥"

अर्थात् संस्कृत व्याकरण में 06 कारक माने जाते हैं। यथा –

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण
4. सम्प्रदान 5. अपादान 6. अधिकरण

नोट → 'सम्बन्ध' एवं 'सम्बोधन' का 'क्रिया' के साथ कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता है, अतः इन दोनों को मूल कारकों में शामिल नहीं किया जाता है, परन्तु कारकों की तरह व्यवहार होने के कारण इन दोनों को भी कारकों के साथ पढ़ लिया जाता है।

→ संस्कृत भाषा 'संयोगात्मक' भाषा मानी जाती है, जिसके कारण संस्कृत में कारकों को शब्द के साथ ही जोड़कर विभक्ति रूप में लिखा जाता है।

→ हिन्दी भाषा 'वियोगात्मक' भाषा मानी जाती है, जिसके कारण हिन्दी में कारकों को शब्द से अलग करके 'परसर्ग' रूप में लिखा जाता है।

उदा:- हे बच्चों! राम ने रावण को बाण से सीता के लिए
हे बालकाः! रामः रावणं बाणेन सीतायै
अयोध्या से रावण को लंका में जाकर मारा।
अयोध्यायाः रावणस्य लंकायां गत्वा अमारयत्।

हे बालकाः	→	सम्बोधन
रामः	→	कर्ता
रावणं	→	कर्म
बाणेन	→	करण
सीतायै	→	सम्प्रदान
अयोध्यायाः	→	अपादान
रावणस्य	→	संबंध
लंकायां	→	अधिकरण

कारक-सारणी

क्र.स.	कारक का नाम	हिन्दी के अनुसार परसर्ग/कारक चिह्न	संस्कृत के अनुसार विभक्ति	संज्ञा विधायक सूत्र
1.	कर्ता	ने	प्रथमा	"स्वतन्त्रः कर्ता" (1-4-54)
2.	कर्म	को	द्वितीया	"कर्तुरीप्सिततमं" (1-4-49)
3.	करण	से/के द्वारा	तृतीया	"साधकतमं करणम्" (1-4-42)
4.	सम्प्रदान	के लिए	चतुर्थी	"कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्" (1-4-32)
5.	अपादान	से (अलग होने के लिए)	पंचमी	"ध्रुवमपायेऽपादानम्" (1-4-24)
6.	सम्बन्ध	का/के/की, रा/रे/री ना/ने/नी	षष्ठी	———
7.	अधिकरण	में/पर	सप्तमी	"आधारोऽधिकरणम्" (1-4-45)
8.	सम्बोधन	हे/अरे/ओ/भो	प्रथमा	———

⇒ पाणिनि/अष्टाध्यायी के अनुसार कारकों का क्रम ⇒

क्र.स.	कारक का नाम	सूत्र क्रमांक
1.	अपादान	1-4-24
2.	सम्प्रदान	1-4-32
3.	करण	1-4-42
4.	अधिकरण	1-4-45
5.	कर्म	1-4-49
6.	कर्ता	1-4-54

Scanned by CamScanner

⇒ **विभक्ति ⇒**

सूत्र → "सङ्ख्याकारकबोधयित्री विभक्तिः"
अर्थात् शब्द के जिस रूप के द्वारा उसकी संख्या (वचन) एवम् उसके कारक का बोध होता है तो उसे विभक्ति कहते हैं।
संस्कृत व्याकरण में विभक्तियाँ 'सात' मानी जाती हैं। यथा

1. प्रथमा 2. द्वितीया 3. तृतीया 4. चतुर्थी
5. पञ्चमी 6. षष्ठी 7. सप्तमी

नोट → 'सम्बोधन' में 'प्रथमा' विभक्ति ही मानी जाती है।
सूत्र → "एकवचनं सम्बुद्धिः"

→ 'सम्बोधन, एकवचन' का रूप 'प्रथमा विभक्ति, एकवचन' के रूप से थोड़ा भिन्न होता है, जिसके कारण 'सम्बोधन, एकवचन' के रूप को 'सम्बुद्धि' के नाम से पुकारा जाता है।

→ 'सम्बोधन' का प्रयोग केवल 'संज्ञा शब्दों' में ही किया जाता है। सर्वनाम 'शब्दों में सम्बोधन का प्रयोग नहीं होता है।

⇒ **विभक्ति के भेद ⇒**

इन 'सातों' विभक्तियों के भी पुनः दो भेद माने जाते हैं। यथा-

1. कारक विभक्ति
2. उपपद विभक्ति

1. **कारक विभक्ति** → जब किसी वाक्य में क्रिया पद के आधार पर विभक्ति प्रयुक्त होती है तो वह कारक विभक्ति कहलाती है। जैसे :-
→ 'पिता पुत्राय क्रुध्यति।'
यहाँ 'क्रुध' धातु ('क्रुध्यति' क्रियापद) के प्रयोग के कारण 'पुत्र' शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति का प्रयोग किया गया है, अतः इसे यहाँ 'कारक विभक्ति' माना जाता है।

2. **उपपद विभक्ति** → जब किसी वाक्य में किसी 'अव्यय' शब्द के आधार पर विभक्ति प्रयुक्त होती है, तो उसे उपपद विभक्ति कहा जाता है। जैसे:-
→ 'ग्रामम् अभितः नद्यौ वहतः।'
यहाँ 'अभितः' अव्यय शब्द के प्रयोग के कारण 'ग्राम' शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति का प्रयोग किया गया है, अतः इसे 'उपपद विभक्ति' माना जाता है।

नोट → सूत्र → "उपपदविभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी"
अर्थात् 'उपपद विभक्ति' की तुलना में 'कारक विभक्ति' अधिक बलवती होती है।
कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी वाक्य में कारक विभक्ति एवम् उपपद विभक्ति दोनों एकसाथ प्रयुक्त हो रही हो तो वहाँ 'कारक विभक्ति' के नियम को ही प्राथमिकता दी जाती है। जैसे:-

प्रश्न :- 'अहं .... नमस्करोमि।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति -
(A) गुरुं (B) गुरवे (C) गुरोः (D) गुरौ

समाधान → यहाँ 'नमस्करोमि' क्रियापद के आधार पर तो 'द्वितीया' विभक्ति लागु होती है तथा 'नमः' अव्यय शब्द के आधार पर 'चतुर्थी' विभक्ति लागु होती है, अतः इस स्थिति में 'उपपद विभक्ति' (चतुर्थी) की अपेक्षा 'कारक विभक्ति' (द्वितीया) को ही अधिक बलवती मानकर द्वितीया विभक्ति रूप 'गुरुं' को ही सही उत्तर माना जायेगा।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

⇒ उक्त या अभिहित कर्ता/कर्म ⇒

किसी भी वाक्य में 'क्रिया' कर्ता के अनुसार प्रयुक्त होती है तो कर्ता को 'उक्त'/'अभिहित' कर्ता कहा जाता है, एवं यदि वाक्य में 'क्रिया' कर्म के अनुसार प्रयुक्त होती है तो वहाँ कर्म को 'उक्त'/'अभिहित' कर्म कहा जाता है।

उक्त या अभिहित कर्ता/कर्म में सदैव 'प्रथमा' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है।

⇒ अनुक्त या अनभिहित कर्ता ⇒

जब किसी वाक्य में 'कर्म' उक्त या अभिहित होता है तो उस वाक्य का कर्ता 'अनुक्त' या 'अनभिहित' कर्ता माना जाता है एवम् अनुक्त या अनभिहित कर्ता में सदैव 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है।

⇒ अनुक्त या अनभिहित कर्म ⇒

जब किसी वाक्य में कर्ता उक्त या अभिहित होता है तो उस वाक्य का कर्म 'अनुक्त' या 'अनभिहित' माना जाता है एवम् अनुक्त या अनभिहित कर्म में सदैव द्वितीया विभक्ति ही प्रयुक्त होती है।

सारांश ⇒

(i) उक्त/अभिहित कर्ता → प्रथमा (कर्तृवाच्य में)
(ii) अनुक्त/अनभिहित कर्ता → तृतीया (कर्मवाच्य/भाववाच्य में)
(iii) उक्त/अभिहित कर्म → प्रथमा (कर्मवाच्य में)
(iv) अनुक्त/अनभिहित कर्म → द्वितीया (कर्तृवाच्य में)

जैसे:-

→ रामः पाठं पठति। | वानरः फलानि खादति।
उक्त कर्ता (प्रथमा) अनुक्त कर्म | उक्त कर्ता (प्रथमा) अनुक्त कर्म (द्वितीया)

→ रामेण पाठः पठ्यते। | वानरेण फलानि खाद्यन्ते।
अनुक्त कर्ता (तृतीया) उक्त कर्म | अनुक्त कर्ता (तृतीया) उक्त कर्म (प्रथमा)

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

1. प्रथमा विभक्ति/कर्ता कारक

1. कर्ता संज्ञा विधायक सूत्र → "स्वतन्त्रः कर्ता"

अर्थात् वाक्य में प्रयुक्त ऐसे शब्द जो अपनी स्वतन्त्र स्थिति को प्रकट करते हैं, उसे कर्ता कहते हैं।

अथवा

वाक्य की क्रिया जिसके द्वारा सम्पादित की जाती है उसे कर्ता कहते हैं। जैसे:-

→ राम पुस्तक पढ़ता है। → रामः पुस्तकं पठति।
→ बन्दर फल खायेगा। → वानरः फलं खादिष्यति।
→ तुम पुस्तक पढ़ो। → त्वं पुस्तकं पठ।
→ वह घर गया। → सः गृहम् अगच्छत्।
→ मुझे पत्र लिखना चाहिए। → अहं पत्रं लिखेयम्।
→ राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। → रामेण पुस्तकं पठ्यते।

⇒ कर्ता के भेद ⇒

कर्ता के तीन भेद माने जाते हैं।

1. हेतु या प्रयोजक → किसी भी क्रिया को सम्पादित करने योग्य शब्द यदि वाक्य में प्रयोग किये बिना ही स्वतन्त्र रूप में प्रथमा विभक्ति में प्रयुक्त होता है तो वहाँ उसे हेतु या प्रयोजक कहा जाता है। जैसे:- रामः, श्यामः, कृष्णः, लता, रमा, अश्वः, गजः etc.

2. कर्ता/उक्त कर्ता/अभिहित कर्ता → किसी भी क्रिया को सम्पादित करने योग्य शब्द यदि वाक्य 'कर्तृवाच्य' के रूप में 'प्रथमा' विभक्ति में प्रयुक्त कर दिया जाता है तो वहाँ उसे कर्ता/उक्त कर्ता/अभिहित कर्ता के नाम से पुकारा जाता है। जैसे:-

→ रामः पुस्तकं पठति।
→ वानरः फलं खादति।
→ बालकाः पठन्ति।

Scanned by CamScanner

Subject ___ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

3\. **कर्मकर्ता / अनुक्त कर्ता / अनभिहित कर्ता** → किसी भी क्रिया को सम्पादित करने योग्य शब्द यदि वाक्य में 'कर्मवाच्य' या 'भाववाच्य' के रूप में 'तृतीया' विभक्ति में प्रयुक्त कर दिया जाता है तो वहाँ उसे 'कर्मकर्ता / अनुक्त कर्ता / अनभिहित कर्ता' कहा जाता है। जैसे :–

→ रामेण पुस्तकं पठ्यते ।
→ वानरेण फलं खाद्यते ।
→ बालकैः पुस्तकानि पठ्यन्ते ।
→ तेन / तया हस्यते ।

2\. सूत्र → "प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा"
किसी भी 'प्रातिपदिक' शब्द की निम्नलिखित चार स्थितियों को प्रकट करने के लिए उस शब्द में 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। यथा –

(i) प्रातिपदिक शब्द के अर्थ मात्र को प्रकट करने के लिए।
(ii) लिंग मात्र की अधिकता के लिए।
(iii) परिमाण मात्र के लिए।
(iv) वचन मात्र के लिए।

(i) **अर्थ मात्र के लिए** → "अपदं न प्रयुञ्जीत"
इस कथन के अनुसार किसी भी प्रातिपदिक शब्द की जब तक पद संज्ञा नहीं हो जाती है, तब तक वह शब्द न तो वाक्य में प्रयुक्त किया जा सकता है एवं न ही किसी अर्थ को प्रकट कर सकता है, अतः किसी भी प्रातिपदिक शब्द के अर्थ मात्र को प्रकट करने के लिए उस शब्द में 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :–

प्रश्न : 'वानर, गज, अश्व, उष्ट्र, गर्दभ' इत्येषां शब्दानाम् अर्थं लिखत ।

Subject ___ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

उत्तर →

क्र. स.	प्रातिपदिक शब्द	प्रथमा एकवचन	अर्थ
1.	वानर	वानरः	बंदर
2.	गज	गजः	हाथी
3.	अश्व	अश्वः	घोड़ा
4.	उष्ट्र	उष्ट्रः	ऊँट
5.	गर्दभ	गर्दभः	गधा

(ii) **लिंग मात्र की अधिकता के लिए** → कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो तीनों लिंगों में प्रयुक्त हो सकते हैं, अतः ऐसे शब्दों में सही लिंग का निर्धारण करने के लिए उस शब्द में 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :–

प्रश्न → 'कङ्कण, तट' अनयोः शब्दयोः लिङ्गनिर्धारणं कुरुत –

उत्तर →

क्र. स.	शब्द	प्रथमा एकवचन	लिंग
1.	कङ्कण	कङ्कणः	पुँल्लिंग
		कङ्कणा	स्त्रीलिंग
		कङ्कणम्	नपुंसकलिंग
2.	तट	तटः	पुँल्लिंग
		तटी	स्त्रीलिंग
		तटम्	नपुंसकलिंग

(iii) **परिमाण मात्र के लिए** → किसी भी प्रातिपदिक शब्द के परिमाण मात्र को प्रकट करने के लिए भी उस शब्द में 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :–

प्रश्न :– 'द्रोण भर चावल' इत्यस्य संस्कृतानुवादः कुरुत –
उत्तर :– 'द्रोणः व्रीहिः'

(iv) **वचन मात्र के लिए** → किसी भी प्रातिपदिक शब्द के वचन मात्र को प्रकट करने के लिए भी उस शब्द में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :–

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

प्रश्न : ' एक, दो, तीन, चार, बालक, बालिका, फल ' शब्देषु वचन निर्धारणं कुरुत →

उत्तर →

क्र.सं.	शब्द	लिंग	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
1.	एक	पुँल्लिंग	एक:	—	—
		स्त्रीलिंग	एका	—	—
		नपुंसकलिंग	एकम्	—	—
2.	दो	पुँल्लिंग	—	द्वौ	—
		स्त्रीलिंग	—	द्वे	—
		नपुंसकलिंग	—	द्वे	—
3.	तीन	पुँल्लिंग	—	—	त्रय:
		स्त्रीलिंग	—	—	तिस्र:
		नपुंसकलिंग	—	—	त्रीणि
4.	चार	पुँल्लिंग	—	—	चत्वार:
		स्त्रीलिंग	—	—	चतस्र:
		नपुंसकलिंग	—	—	चत्वारि
5.	बालक	पुँल्लिंग	बालक:	बालकौ	बालका:
6.	बालिका	स्त्रीलिंग	बालिका	बालिके	बालिका:
7.	फल	नपुंसकलिंग	फलम्	फले	फलानि

→ चार बालिकाएँ चार फल खाती है।
चतस्र: बालिका: चत्वारि फलानि खादन्ति ।

→ तीन बालक तीन ग्रंथ लिखते हैं।
त्रय: बालका: त्रयान् ग्रन्थान् लिखन्ति ।
(त्रय: ग्रन्था:)

3. सूत्र → " अभिधेयमात्रे प्रथमा "
किसी भी पदार्थ का 'नाम' मात्र प्रकट करने के लिए 'प्रथमा' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे: -
→ यह राम है। → अयं राम: । , यह फल है। → इदं फलम्।
→ यह लता है। → इयं लता ।

4. सूत्र → " सम्बोधने च "
सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति ही मानी जाती है। जैसे: -
हे राम! हे रामौ! हे रामा: ।
हे सीते! हे सीते! हे सीता: ।

5. 'इति' शब्द के योग में प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त होती है।
जैसे: प्र. वयं तं ······ इति नाम्ना जानीम: ।' रिक्तस्थानपूर्तये उचित पदमस्ति -
(A) जयन्त: (B) जयन्तम् (C) जयन्तेन (D) जयन्ते

2. द्वितीया विभक्ति / कर्म कारक

1. कर्म संज्ञा विधायक सूत्र → " कर्तुरीप्सिततमं कर्म "
(कर्तु: ईप्सिततमं कर्म)
कर्ता का सबसे इच्छित पदार्थ कर्म

कर्ता के 'ईप्सिततम (सबसे इच्छित) पदार्थ की कर्म संज्ञा मानी जाती है। अर्थात् किसी भी वाक्य में कर्ता जिस पदार्थ को सबसे अधिक चाहता है, उस पदार्थ की कर्म संज्ञा मानी जाती है।

2. कर्म आदेश सूत्र (विधि सूत्र) → " कर्मणि द्वितीया "
वृत्ति → अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात् ।
अर्थात् कर्मसंज्ञक शब्दों में (अनुक्त या अनभिहित कर्म में) द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है।

जैसे: -
→ कृष्ण (कर्ता) पाठ (कर्म) पढ़ता है। → कृष्ण: पाठं (अनुक्त कर्म) पठति ।
→ वे (कर्ता) पत्र (कर्म) लिखेंगे । → ते पत्रं लिखिष्यन्ति ।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

→ तुम फल खाओ । → त्वं फलं खाद ।
कर्म

3. सूत्र → "तथायुक्तं चानीप्सितम्"
(तथायुक्तं च अनीप्सितम्)
अनिच्छित पदार्थ
अर्थात् कर्ता के 'अनीप्सित' (अनिच्छित) पदार्थ की भी कर्म संज्ञा मानी जाती है। जैसे:-
→ गाँव को जाता हुआ मोहन तिनके को स्पर्श करता है।
ईप्सिततम पदार्थ कर्ता अनीप्सित पदार्थ (कर्म संज्ञा)
ग्रामं गच्छन् मोहनः तृणं स्पृशति ।
"कर्तुरीप्सिततमं कर्म" "तथायुक्तं चानीप्सितम"
→ बाजार को जाती हुई माता शिशु को देखती है।
ईप्सिततम पदार्थ कर्ता अनीप्सित पदार्थ
आपणं गच्छन्ती माता शिशुं पश्यति ।
"कर्तुरीप्सिततमं कर्म" "तथायुक्त चानीप्सितम"
→ भोजन करता हुआ वह विष खा जाता है।
ईप्सिततम पदार्थ कर्ता अनीप्सित पदार्थ
ओदनं भुञ्जानः/कुर्वन्/कुर्वाणः सः विषं खादति/भुङ्क्ते ।
"कर्तुरीप्सिततमं कर्म" "तथायुक्त चानीप्सितम"

4. सूत्र → "अकथितञ्च"
व्याख्या → अपादानादि विशेषैरविवक्षितं कारकं कर्मसञ्ज्ञं स्यात्।
अपादान आदि विशेषणों से अविवक्षित कारक की कर्म संज्ञा मानी जाती है।
संस्कृत व्याकरण में निम्नलिखित 16 प्रकार की धातु एवम् इनके समानार्थी अन्य धातु 'द्विकर्मक' धातु माने जाते हैं। यथा —
1. दुह् (दुहना) 2. याच् (माँगना)
3. पच् (पकाना) 4. दण्ड् (सजा देना)

5. रुध् (रोकना) 6. प्रच्छ् (पूछना)
7. चि (चुनना/तोड़ना) 8. ब्रू (कहना)
9. शास् (उपदेश देना) 10. जि (जीतना)
11. मथ् (मथना) 12. मुष् (चुराना)
13. नी (ले जाना) 14. हृ (हरण करना)
15. कृष् (खींचना) 16. वह् (ढोना)

→ समानार्थी अन्य धातु →
1. भिक्ष् (माँगना) - याच् का समानार्थी धातु
2. भाष् (कहना) - ब्रू का समानार्थी धातु
→ इन सभी द्विकर्मक धातुओं के साथ प्रायः दो-दो कर्म प्रयुक्त होते हैं। यथा —
(i) प्रधान या मुख्य कर्म → प्रायः 'क्या/किसे/किसको' प्रश्न के उत्तर में प्राप्त होने वाला शब्द ।
(ii) अप्रधान कर्म या गौण कर्म → प्रायः अन्य किसी प्रश्न के उत्तर में प्राप्त होने वाला शब्द
→ इनमें से अप्रधान या गौण कर्म को ही 'अकथित' कर्म कहा जाता है एवम् "अकथितञ्च" सूत्र से उसकी कर्म संज्ञा हो जाती है। जैसे:-

→ ग्वाला गाय का दूध दुहता है।
गोपालः/गोपः गां/धेनुं पयः/दुग्धं दोग्धि ।
कर्ता अकथित कर्म प्रधान कर्म
"अकथितञ्च" "कर्तुरीप्सिततमं कर्म"
→ भिखारी राजा से धन माँगता है।
भिक्षुकः/याचकः नृपं धनं याचते/भिक्षते ।
अकथित कर्म प्रधान कर्म
→ वह चावलों से भात पकाती है।
सा तण्डुलान् ओदनं पचति ।
अकथित कर्म प्रधान कर्म

Scanned by CamScanner

→ राजा दुर्जन को सौ रुपये का दण्ड देता है।
नृपः/राजा दुर्जनं शतं दण्डयति।
अकथित कर्म प्रधान कर्म

→ छात्र गुरु से प्रश्न पूछता है।
छात्रः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
अकथित कर्म प्रधान कर्म

5. सूत्र → " उपान्वध्याङ्वसः "
(उप अनु अधि आङ् + वसः) 'वस्' धातु
यदि 'वस्' धातु से पहले 'उप/अनु/अधि/आङ्' उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तो वहाँ क्रिया के आधार की (रहने के स्थान की) कर्म संज्ञा मानी जाती है।
यदि 'वस्' धातु से पहले कोई उपसर्ग नहीं जुड़ा हुआ हो तो वहाँ क्रिया के आधार की 'अधिकरण' संज्ञा ही मानी जाती है। अर्थात् वहाँ सप्तमी विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे:

→ हरि वैकुण्ठ में रहता है।
हरिः वैकुण्ठे वसति।
हरिः वैकुण्ठम् उपवसति/अनुवसति/अधिवसति/आवसति।

→ वह मन्दिर के समीप रहता है।
सः मन्दिरम् उपवसति।

→ वह घर के पीछे रहता है।
सः गृहम् अनुवसति।

6. वार्तिक- ❀ अभुक्त्यर्थस्य न ❀
(अ भुक्ति अर्थस्य न)
'वस्' धातु से पूर्व 'उप' उपसर्ग जुड़ जाने पर उसके निम्नानुसार दो अर्थ ग्रहण किये जाते हैं। यथा—
(i) रहना
(ii) उपवास या व्रत रखना।
इनमें से 'रहना' अर्थ ग्रहण करने पर तो क्रिया के

आधार में 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। एवम् 'उपवास रखना' अर्थ ग्रहण करने पर क्रिया के आधार में 'सप्तमी' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ सीता वन में रहती है।
सीता वनम् उपवसति।

→ सीता वन में उपवास रखती है।
सीता वने उपवसति।

7. सूत्र → " अधिशीङ्स्थासां कर्म "
'अधि' उपसर्ग + 'शीङ्/स्था/आस्' धातु
(i) शीङ् → सोना/शयन करना
(ii) स्था → रुकना/ठहरना/बैठना
(iii) आस् → बैठना
यदि किसी वाक्य में 'शीङ्/स्था/आस्' धातु से पहले 'अधि' उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तो वहाँ क्रिया के आधार की 'कर्म संज्ञा' मानी जाती है।
यदि इन तीनों धातुओं से पहले कोई उपसर्ग नहीं जुड़ा हुआ हो तो वहाँ क्रिया के आधार की 'अधिकरण' संज्ञा मानते हुए सप्तमी विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

→ हरि वैकुण्ठ में सोता है।
हरिः वैकुण्ठे शेते। } उभौ
हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।

→ राजा सिंहासन पर बैठता है।
राजा सिंहासने तिष्ठति/आस्ते। } उभौ।
राजा सिंहासनं अधितिष्ठति/अध्यास्ते।

→ अध्यापक कुर्सी पर बैठता है/सोता है।
अध्यापकः आसन्दिकायां शेते/तिष्ठति/आस्ते।
अध्यापकः आसन्दिकाम् अधिशेते/अधितिष्ठति/अध्यास्ते।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

8. सूत्र → " अभिनिविशश्च "

(अभि+नि + 'विश' धातु)

यदि किसी वाक्य में 'विश' धातु से पहले 'अभि' एवं 'नि' दोनों उपसर्ग जुड़े हुए हो तो वहाँ क्रिया के आधार की कर्म संज्ञा मानी जाती है।

यदि 'विश' धातु से पहले कोई उपसर्ग नहीं जुड़ा हुआ हो तो वहाँ क्रिया के आधार की अधिकरण संज्ञा ही मानी जाती है। जैसे:-

→ गुरु शिष्य को सन्मार्ग पर ले जाता है।

(i) गुरु: शिष्यं सन्मार्गे विशति।

(ii) गुरु: शिष्यं सन्मार्गम् अभिनिविशति।

(iii) उभौ ✓

9. सूत्र → " अन्तराऽन्तरेण युक्ते "

(i) अन्तरा → के बिना / बीच में

(ii) अन्तरेण → के बिना / बीच में

यदि किसी वाक्य में 'अन्तरा / अन्तरेण' अव्यय शब्दों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ इनके साथ लिखे जाने वाले सम्बन्धवाचक शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है।

ज्ञानम् अन्तरा / अन्तरेण न मुक्ति:।

→ गंगा और यमुना के बीच में प्रयागराज है।

गंगां यमुनां च अन्तरा / अन्तरेण प्रयागराज: अस्ति।

→ प्रयोजन के बिना चाणक्य सपने में भी कोई चेष्टा नहीं करता है।

- न च प्रयोजनमन्तरा चाणक्य: स्वप्नेऽपि चेष्टते।

10. वार्तिक - ❀ अभित:परित:समया,निकषा हा प्रति योगेऽपि ❀

(i) अभित: → दोनों ओर

(ii) परित: → चारों ओर

(iii) समया → समीप

(iv) निकषा → निकट

(v) हा → शोक

(vi) प्रति → की ओर

(vii) अनु → पीछे

यदि किसी वाक्य में उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ इनके साथ लिखे जाने वाले सम्बन्ध वाचक शब्द में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ गाँव के चारों ओर खेत है।

ग्रामं परित: क्षेत्राणि सन्ति।

→ विद्यालय के दोनों ओर हरे पेड़ है।

विद्यालयम् अभित: हरिता: वृक्षा: सन्ति।

→ घर के समीप / निकट एक मन्दिर था।

गृहं समया / निकषा एकं मन्दिरम् आसीत्।

→ नास्तिक को शोक है।

नास्तिकं हा।

→ मुझे देखकर वह घर की ओर भाग गयी।

मां दृष्ट्वा सा गृहं प्रति अधावत्।

→ सिपाही चोर के पीछे दौड़ रहे है।

राजपुरुषा: चौरम् अनु धावन्ति। (धावन्त: सन्ति)

प्रश्न → '.............. न प्रतिभाति किञ्चिद' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →

(A) बुभुक्षित: ✓(B) बुभुक्षितं

(C) बुभुक्षिताय (D) बुभुक्षिते

(भूखे को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है।)

11. वार्तिक कारिका → ❀ उभसर्वतसो कार्याधिगुपर्यादिषु त्रिषु। द्वितीयाऽऽम्रेडितान्तेषु ततोऽन्यत्रापि दृश्यते॥ ❀

(i) उभ + तसिल् → उभयतः (दोनों ओर)
(ii) सर्व + तसिल् → सर्वतः (सब ओर)
(iii) धिक् → धिक्कार
(iv) उपर्युपरि → ऊपर ही ऊपर (सबसे ऊपर)
(v) अध्यधि → बीचों-बीच (सबसे बीच में)
(vi) अधोऽधः → नीचे ही नीचे (सबसे नीचे)

उपर्युक्त सभी शब्दों के योग में सम्बन्धवाचक शब्द में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ गाँव के दोनों ओर दो नदियाँ बहती हैं।
ग्रामम् उभयतः नद्यौ वहतः।

→ घर के सब ओर अनेक लोग बैठे हैं।
गृहं सर्वतः अनेकाः जनाः तिष्ठन्ति।

→ नास्तिक को धिक्कार है जो ईश्वर को नहीं मानता है।
नास्तिकं धिक् यः ईश्वरं न मन्यते।

→ संसार में सबसे ऊपर सूर्य है।
लोकम् उपर्युपरि सूर्यः अस्ति।

→ संसार में सबसे नीचे जल है।
लोकम् अधोऽधः जलम् अस्ति।

→ संसार में सबसे बीच में हरि है।
लोकम् अध्यधि हरिः अस्ति।

नोट → 'उपर्युपरि / अध्यधि / अधोऽधः' इन तीनों शब्दों का प्रयोग 'आम्रेडित' (दोहराव) रूप में होने पर ही इनके साथ 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। यदि इन शब्दों का प्रयोग 'एकल' रूप में (उपरि / अधि / अधः) हो रहा हो तो वहाँ इनके साथ षष्ठी विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे:

प्रश्न:- '......... उपर्युपरि हरिः अस्ति।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →
(A) लोकम् (B) लोकस्य (C) लोके (D) लोकात्

प्रश्न → '......... उपरि हरिः अस्ति।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →
(A) लोकम् (B) लोकस्य (C) लोके (D) लोकात्

→ वृक्ष के ऊपर बंदर है।
वृक्षस्य उपरि वानरः अस्ति।

→ वृक्ष के नीचे गाय है।
वृक्षस्य अधः धेनुः अस्ति।

12. सूत्र → "क्रियाविशेषणं क्लीबत्वमेकवचनञ्च"

यदि किसी वाक्य में किसी 'क्रियाविशेषण' शब्द का प्रयोग किया जाना हो तो उसे सदैव 'द्वितीया' विभक्ति, 'नपुंसकलिंग' एकवचन, में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे:-

→ घोड़ा तेज दौड़ता है।
अश्व तीव्रं धावति।

→ लता मधुर गाती है।
लता मधुरं गायति।

13. सूत्र → "कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे"
(काल अध्वनोः अत्यन्तसंयोगे)
समयवाचक शब्द, मार्गवाचक शब्द, निरन्तरता (लगातार)

यदि किसी वाक्य में 'कालवाचक' एवं 'मार्गवाचक' शब्दों में कार्य का लगातार होना पाया जाता है तो वहाँ उस 'कालवाचक' / 'मार्गवाचक' शब्दों में द्वितीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ वह महीने भर तक लगातार पढ़ता है।
सः मासं पठति / अधीते।

→ नदी कोस भर तक लगातार टेढ़ी है।
नदी क्रोशं कुटिला अस्ति।

→ वह पाँच दिन से लगातार अनुपस्थित है।
सः / सा पञ्चदिनानि अनुपस्थितः / अनुपस्थिता।
(पञ्चदिवसान्)

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

Subject ____________ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

नोट → यदि इस प्रकार के वाक्यों में कार्य का लगातार होना नहीं पाया जाता है तो वहाँ 'कालवाचक / मार्गवाचक' शब्द में 'षष्ठी' विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

→ वह महीने में दो दिन पढ़ता है।
सः मासस्य द्विः पठति / अधीते ।

→ नदी कोश भर में एक स्थान पर टेढ़ी है।
नदी कोशस्य एकस्थाने कुटिला अस्ति ।

14. वार्तिक - ❀ अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम् ❀

यदि किसी वाक्य में किसी 'अकर्मक' क्रिया का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ उसके साथ लिखे जाने वाले 'देशवाचक शब्द में / कालवाचक / भाववाचक / गन्तव्य मार्गवाचक' शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ वह कुरु देश में सोता है।
सः कुरून् शेते / स्वपिति ।

→ वह गाय दुहने तक / महीने भर तक / कोश भर तक बैठता है / चलता है।
सः गोदोहं / मासं / क्रोशं तिष्ठति / आस्ते / चलति ।

नोट → अकर्मक क्रिया के साथ किसी देश विशेष का नाम होने पर भी 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। यदि देश विशेष की जगह किसी स्थान विशेष का नाम लिखा हुआ है तो वहाँ 'सप्तमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ हरि बैकुण्ठ में सोता है।
हरिः वैकुण्ठे शेते ।

→ हरि कुरु देश में सोता है।
हरिः कुरून् शेते ।

15. सूत्र → "गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि"
यदि किसी वाक्य में किसी 'गत्यर्थक' क्रिया का प्रयोग हो

Subject ____________ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

रहा हो तो वहाँ 'स्थानवाचक' शब्द होने पर उसमें विकल्प से 'द्वितीया' अथवा 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। लेकिन दोनों में से एक का चयन करने की स्थिति उत्पन्न होने पर 'द्वितीया' का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

प्रश्न → 'रामः ..... गच्छति ।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →

→ (A) गृहं (B) गृहाय
✓(C) उभौ (D) उभावेव न

→ ✓(A) गृहं (B) गृहाय
(C) गृहे (D) गृहस्य

नोट → (i) यदि 'गत्यर्थक' क्रियाओं में शारीरिक गति नहीं होकर केवल मानसिक गति का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ 'मनस्' शब्द में तो 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है तथा उसके 'स्थान' / 'व्यक्तिवाचक' शब्द में केवल 'द्वितीया' का ही प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

→ वह मन से हरि के पास जाता है।
सः मनसा हरिं गच्छति ।

(ii) यदि 'गत्यर्थक' क्रियाओं के साथ 'स्थानवाचक' शब्द के रूप में 'मार्ग' या उसका अन्य कोई पर्यायवाची शब्द लिखा जाना हो तो उसमें भी केवल 'द्वितीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ वह मार्ग पर चलता है।
सः मार्गं गच्छति / चलति ।

⇒ **कर्म के भेद** ⇒ कर्म के प्रमुखतः दो भेद माने जाते हैं। यथा -
(1.) ईप्सित कर्म
(2) अनीप्सित / ईप्सितेतर कर्म

(1.) **ईप्सित कर्म** → कर्ता जिस पदार्थ को अधिक चाहता है उसे ईप्सित कर्म कहते हैं।

Scanned by CamScanner

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

ईप्सित कर्म के भी पुनः तीन उपभेद माने जाते हैं। यथा—

(i) निर्वर्त्य कर्म → रचनात्मक कार्य से सम्बन्धित कर्म।

(ii) विकार्य कर्म → विध्वंसात्मक / विनाशात्मक कार्य से सम्बन्धित कर्म।

(iii) प्राप्य कर्म → अन्य सभी प्रकार के ईप्सित कर्म।

(2) अनीप्सित या ईप्सितेतर कर्म → कर्ता की इच्छा के बिना ही प्राप्त होने वाला कर्म, अनीप्सित या ईप्सितेतर कर्म कहलाता है।

इसके भी पुनः 'चार' उपभेद कर दिये जाते हैं। यथा —

(i) उदासीनभाव कर्म → इच्छा के बिना प्राप्त होने वाला सामान्य अनीप्सित कर्म।

(ii) द्वेष्यभाव कर्म → इच्छा के बिना जहर आदि का मुख में चले जाना।

(iii) अकथित कर्म या संज्ञान्तर से अनाख्यात कर्म → द्विकर्मक धातु में प्राप्त होने वाला गौण या अप्रधान कर्म।

(iv) अन्यपूर्वक कर्म → अन्य नियमों के आधार पर प्राप्त होने वाला कर्म।

जैसे: → कुम्भकारः घटं करोति। (निर्वर्त्य कर्म)

→ स्वर्णकारः स्वर्णं भस्मीकरोति। (विकार्य कर्म)

→ वानरः फलं खादति। (प्राप्य कर्म)

→ ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।
(प्राप्य कर्म) (उदासीनभाव कर्म)

→ ओदनं भुञ्जानः विषं भुङ्क्ते।
(प्राप्य कर्म) (द्वेष्यभाव कर्म)

→ गोपालः गां दुग्धं दोग्धि।
(अकथित कर्म) (प्राप्य कर्म)

→ हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।
(अन्यपूर्वक कर्म)

→ ग्रामं परितः क्षेत्राणि सन्ति। (अन्यपूर्वक कर्म)

3. तृतीया विभक्ति / करण कारक

Subject ____ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

1. करण संज्ञा विधायक सूत्र → "साधकतमं करणम्"
'साधन'

किसी भी क्रिया को सम्पादित करने के लिए जो साधन काम में लिया जाता है, उस साधन की ही 'करण संज्ञा' मानी जाती है।

2. करण आदेश सूत्र (विधि सूत्र) →
"कर्तृकरणयोस्तृतीया"

अनुक्त / अनभिहित कर्ता में

अर्थात् 'अनुक्त / अनभिहित' कर्ता में (कर्मवाच्य या भाववाच्य के कर्ता में) तथा करण संज्ञक शब्दों में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ बालक गेंद से खेलता है।
बालकः कन्दुकेन क्रीडति।
(करण संज्ञक शब्द)

→ राम के द्वारा पत्र लिखा जाता है।
रामेण पत्रं लिख्यते।
(अनुक्त कर्ता)

→ उसके द्वारा हँसा जाता है।
तेन / तया हस्यते।
(अनुक्त कर्ता)

→ उनके द्वारा हँसा जाता है।
तैः / ताभिः हस्यते।
(अनुक्त कर्ता)

→ राम के द्वारा बाण से बाली मारा गया।
रामेण बाणेन हतो बाली।
(अनुक्त कर्ता) (करण संज्ञा)

→ वह जल से मुख धोती है।
सा जलेन मुखं प्रक्षालयति।
(करण संज्ञा)

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

→ वह दूध से रोटी खाता है।
सः दुग्धेन कर्पटिकां/रोटिकां खादति।
(करण संज्ञा)

3\. सूत्र → "सहयुक्तेऽप्रधाने"
सह/साकम्/समम्/सार्धम् → के साथ
यदि किसी वाक्य में 'सह/साकम्/समम्/सार्धम्' शब्दों का प्रयोग किया जाना हो तो वहाँ इनके साथ लिखे जाने वाले 'अप्रधान' कर्ता में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है।
जैसे:-
→ राम के साथ सीता और लक्ष्मण भी वन में गये।
रामेण सह/साकं/समं/सार्धं सीतालक्ष्मणौ वनम् अगच्छत।
→ पिता पुत्र के साथ खेलता है।
पिता पुत्रेण सह क्रीडति।
→ पुत्र पिता के साथ खेलता है।
पुत्रः पित्रा सह क्रीडति।

प्रश्न → ······ सह याति कौमुदी। 'रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति' →
(A) शशिः (B) शशैः (C) शशिना (D) शशिणा
अर्थ:- चन्द्रमा के साथ चाँदनी भी चली जाती है।

नोट → यदि किसी वाक्य में 'सह/साकम्/समम्/सार्धम्' शब्दों का प्रयोग नहीं हो रहा हो, परन्तु इनका अर्थ प्रकट हो रहा हो तो वहाँ पर भी 'अप्रधान' कर्ता में 'तृतीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे:-
प्रश्न:- 'पुत्र ······ आगच्छति।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →
(A) पितुः (B) पिता (C) पित्रा (D) पित्रेण
अर्थ:- पुत्र पिता के साथ आता है।

4\. सूत्र → "येनाङ्गविकारः"
(येन अङ्ग विकारः)
यदि हमारे शरीर के किसी अंग विशेष में कोई विकार होता है तो वहाँ उस अंगवाचक शब्द में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है।
जैसे:-
→ वह आँख से काना है।
सः नेत्रेण (अक्ष्णा) काणः।
→ बालक पैर से लँगड़ा है।
बालकः पादेन खञ्जः।
→ मुकेश सिर से गंजा है।
मुकेशः शिरसा खल्वाटः।
→ लता हाथ से लूली व पीठ से कुबड़ी है।
लता हस्तेन लुञ्जा पृष्ठेन कुब्जा च अस्ति।

5\. सूत्र → "इत्थंभूतलक्षणे"
यदि किसी लक्षण विशेष से किसी पदार्थ की पहचान होती है तो वहाँ उस लक्षणवाचक शब्द में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ वह जटाओं से तपस्वी लगता है।
सः जटाभिः तपस्वी/तापसः प्रतीयते।
→ वह कुण्डलों से सन्यासिनी/तपस्विनी लगती है।
सा कुण्डलाभ्यां सन्यासिनी/तपस्विनी/तापसी प्रतीयते।
→ वह पुस्तकों से छात्र लगता है।
सः पुस्तकैः छात्रः प्रतीयते।

6\. सूत्र → "प्रकृत्यादिभ्य उपसङ्ख्यानम्"
(प्रकृति, स्वभाव, जाति, गोत्र, सुख, दुःख, सम, विषम)
सीधा टेढ़ा
यदि किसी वाक्य में 'प्रकृत्यादिगण' के शब्दों (प्रकृति, स्वभाव, जाति, गोत्र, सुख, दुःख, सम, विषम) का प्रयोग किया जाना हो तो वहाँ उस शब्द विशेष में 'तृतीया'

Subject

Date: __/__/__

विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ वह प्रकृति से साधु है।
सः प्रकृत्या साधुः अस्ति।

→ सरला स्वभाव से सरल है।
सरला स्वभावेन सरला अस्ति।

→ वह जाति से ब्राह्मण है।
सः जात्या ब्राह्मणः अस्ति।

→ मैं गोत्र से मिश्र हूँ।
अहं गोत्रेण मिश्रः अस्मि।

→ वह सुख से/दुःख से रहता है।
सः सुखेन / दुःखेन वसति।

→ वह सीधा / टेढ़ा चलता है।
सः समेन / विषमेन चलति।

7. सूत्र → "अपवर्गे तृतीया"
अपवर्ग = फलप्राप्ति

किसी भी कार्य को लगातार करने पर यदि अन्त में 'फल की प्राप्ति' हो जाती है तो वहाँ 'कालवाचक/मार्गवाचक' शब्द में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ उसने महीने भर में / कोस भर में व्याकरण सीख लिया।
सः मासेन / क्रोशेन व्याकरणम् अधीतः।

→ उसने दस दिन में आरोग्य प्राप्त कर लिया।
सः दशदिवसैः आरोग्यं लब्धवान्।

→ रोगी बारह दिनों में नीरोग हो गया।
रोगी द्वादशभिः दिवसैः नीरोगः जातः। (द्वादशदिनैः)

→ उसने योजन भर में समास सीख लिया।
सः योजनेन समासः अधीतः।

नोट → यदि लगातार कार्य करने पर भी अन्त में फल की प्राप्ति नहीं होती है तो वहाँ 'कालवाचक/मार्गवाचक' शब्द में द्वितीया विभक्ति ही प्रयुक्त होती है।

Subject

Date: __/__/__

→ महीनेभर पढ़ा, कुछ नहीं सीखा।
मासम् अधीतः नायातः।

→ कोशभर पढ़ा, कुछ नहीं सीखा।
क्रोशमधीतः नायातः।

8. सूत्र → "दिवः कर्म च"
दिव् = जुआ खेलना

यदि किसी वाक्य में 'दिव्' धातु का प्रयोग 'जुआ खेलना' अर्थ में हो रहा हो तो वहाँ खेलने के साधनवाचक शब्द में विकल्प से 'द्वितीया' अथवा 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

प्रश्न → शकुनिः .... दीव्यति। "रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति →
(A) अक्षान् (B) अक्षैः (C) उभौ (D) उभावेव न
(शकुनि पासों से खेलता है।)

9. सूत्र → "तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम्"
समान = तुल्यः / समः / सदृशः

यदि किसी वाक्य में समानता प्रकट करने के लिए 'तुल्यः / समः / सदृशः' जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है तो वहाँ जिससे समानता प्रकट की जाती है, उस शब्द में विकल्प से 'तृतीया' अथवा 'षष्ठी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ वह मेरे पुत्र के समान है।
सः मम पुत्रेण / पुत्रस्य समः/तुल्यः/सदृशः अस्ति।

→ वह मेरी बहिन के समान है।
सा मम भगिन्या / भगिन्याः समः/तुल्यः/सदृशः अस्ति।

10. वार्तिक - "गम्यमानाऽपि क्रिया कारकविभक्तौ प्रयोजिका"
यदि किसी वाक्य में 'अलम्' शब्द का प्रयोग 'निषेध' अर्थ में किया जा रहा हो तो वहाँ जिस कार्य

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

के लिए मना किया जा रहा है उस कार्य वाचक शब्द में 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ विवाद मत करो। → अलं विवादेन।

→ मत हँसो। → अलं हसितेन।

→ हे राजन्! व्यर्थ का श्रम मत करो।

अलं महीपाल! तव श्रमेण।

4. चतुर्थी विभक्ति/सम्प्रदान कारक

1. सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र →

"कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्"

(कर्मणा यम् अभिप्रैति स सम्प्रदानम्)

दान आदि कर्म से — जिसको प्रसन्न किया जाता है — वह सम्प्रदान कहलाता है।

'दान' आदि कर्म के द्वारा जिसको प्रसन्न किया जाता है, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि किसी वाक्य में 'देना' क्रिया का प्रयोग हो रहा हो तथा देने में 'दान' या 'प्रसन्नता' की भावना हो तो वहाँ जिसको दिया जाता है, उस शब्द की सम्प्रदान संज्ञा मानी जाती है तथा "चतुर्थी सम्प्रदाने" सूत्र से सम्प्रदान संज्ञक शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ राजा याचक को धन देता है।

नृपः/राजा याचकाय धनं ददाति/यच्छति।

→ सेठ ब्राह्मणों को गाय देता है।

श्रेष्ठी ब्राह्मणेभ्यः धेनूः ददाति/यच्छति। (एकवचन)

सेठ ब्राह्मणों को गाय देते हैं।

श्रेष्ठिनः ब्राह्मणेभ्यः ददति/यच्छन्ति। (बहुवचन)

→ गुरु शिष्यों को ज्ञान देते हैं।

गुरवः शिष्येभ्यः ज्ञानं ददति/यच्छति।

→ मोहन सोहन को पुस्तक देता है।

मोहनः सोहनाय पुस्तकं ददाति/यच्छति।

अन्वर्थ संज्ञा → पाणिनि मुनि के अनुसार तो 'देना' क्रिया के योग में 'दान या प्रसन्नता' की भावना होने पर ही जिसको दिया जाता है उस शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है।

पाणिनि के अनुसार यदि देने में दान या प्रसन्नता की भावना नहीं हो तो वहाँ जिसको दिया जाता है, उस शब्द में 'षष्ठी' विभक्ति प्रयुक्त होती है।

महर्षि पतंजलि के अनुसार 'देना' क्रिया के योग में 'प्रसन्नता या अप्रसन्नता' सभी स्थितियों में 'चतुर्थी' विभक्ति का ही प्रयोग किया जाता है।

दोनों में से एक का चयन करने की स्थिति उत्पन्न होने पर "मुनीनां यथोत्तरं प्रामाण्यम्" सिद्धान्त के आधार पर पतंजलि मुनि के नियम को प्राथमिकता देते हुए 'चतुर्थी' विभक्ति को ही सही उत्तर माना जाता है। जैसे:-

→ राजा धोबी को कपड़े देता है।

पाणिनि के अनुसार → राजा रजकस्य वस्त्राणि ददाति। - II

पतंजलि के अनुसार → राजा रजकाय वस्त्राणि ददाति। - I

→ गुरु शिष्य को थप्पड़ देता है।

पाणिनि के अनुसार → गुरुः शिष्यस्य चपेटां ददाति। - II

पतंजलि के अनुसार → गुरुः शिष्याय चपेटां ददाति। - I

2. वार्तिक - अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया

यदि किसी वाक्य में देने में 'अशिष्टता/अश्लीलता' का भाव प्रकट हो रहा हो तो वहाँ जिसको दिया जाता है, उस शब्द में 'तृतीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है तथा इस

Scanned by CamScanner

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

प्रकार के वाक्यों में 'दा / यच्छ' धातु को आत्मनेपद में प्रयुक्त किया जाता है। जैसे :-

→ कामुक दासी को धन देता है।
कामुकः दास्या धनं संयच्छते / ददाते ।

3. वार्तिक- ❀ यजेः कर्मणः करणसंज्ञा सम्प्रदानस्य च कर्मसंज्ञा ❀
यदि किसी वाक्य में 'देना' अर्थ को प्रकट करने के लिए 'यज्' धातु का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिसको दिया जाता है उस शब्द में तो 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त हो जाती है। (सम्प्रदान की कर्म संज्ञा हो जाती है) तथा जो पदार्थ दिया जाता है उसमें 'तृतीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। (कर्म की करण संज्ञा हो जाती है।) जैसे :-

→ भक्त रुद्र को पशु देता है।
'दा / यच्छ' के अनुसार → भक्तः रुद्राय पशुं ददाति / यच्छति।
'यज्' के अनुसार → भक्तः रुद्रं पशुना यजते ।
उभौ ✓

4. सूत्र → "रुच्यर्थानां प्रीयमाणः"
(रुचि अर्थानां प्रीयमाणः)
'अच्छा लगना' अर्थ जिसको अच्छा लगता है
वाले धातु या नहीं लगता है।
(रुच / स्वद् धातु)
यदि किसी वाक्य में 'अच्छा लगना' अर्थ को प्रकट करने वाली धातुओं का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ 'प्रीयमाण' शब्द में (जिसको अच्छा लगता है या नहीं लगता है उस शब्द में) 'पञ्चमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ बालक गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं।
बालकाय गणेशाय मोदकानि रोचन्ते / स्वदन्ते ।
→ कार्तिकेय को लड्डू अच्छे नहीं लगते हैं।
कार्तिकेयाय मोदकानि न रोचन्ते / स्वदन्ते ।

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

→ मुझे पढ़ना अच्छा लगता है और उसे घूमना अच्छा लगता है।
मह्यं / मे पठनं रोचते तथा च तस्मै भ्रमणं रोचते ।
→ मुझे मालपुआ अच्छा नहीं लगता है।
न मे स्वदते ऽपूपः ।
→ तुम्हें मालपुए अच्छे लगते हैं
तुभ्यं / ते स्वदन्ते ऽपूपाः ।

5. सूत्र → "क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः"
(i) क्रुध → क्रोध करना
(ii) द्रुह → द्रोह करना
(iii) ईर्ष्य् → ईर्ष्या करना
(iv) असूय → जलना
समानार्थी अन्य धातु →
(v) कुप् → क्रोध करना
(vi) रुष → क्रोध करना
उपर्युक्त सभी धातुओं के योग में जिसके प्रति 'क्रोध' आदि प्रकट किया जाता है उस शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
पिता पुत्राय क्रुध्यति / कुप्यति / रुष्यति ।
→ दुर्जन सज्जनों से द्रोह करते हैं।
दुर्जनाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति ।
→ मोहन सोहन से ईर्ष्या कर रहा है।
मोहनः सोहनाय ईर्ष्यति ।
→ कृष्णा राधा से जलती है।
कृष्णा राधायै असूयति ।
→ रुष्यति माता ..... ।
(A) पुत्रं (B) पुत्रेण (C) पुत्राय (D) पुत्रे
अपवाद → सः ..... ईर्ष्यति ।
(A) आर्याय (B) आर्यायै (C) आर्यायाम (D) आर्याम

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

कारण → 'भार्या' (पत्नी) के प्रति कभी ईर्ष्याभाव उत्पन्न नहीं हो सकता है, अत: यहाँ 'चतुर्थी' का प्रयोग नहीं करके 'द्वितीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है।

6. सूत्र → "क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयो: कर्म"
(उपसर्ग — द्वितीया)

यदि 'क्रुध् / द्रुह्' धातु से पहले किसी 'उपसर्ग' का प्रयोग कर दिया गया हो तो वहाँ, जिसके प्रति 'क्रोध' आदि प्रकट किया जाता है, उस शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
(i) पिता पुत्राय क्रुध्यति।
(ii) पिता पुत्रं संक्रुध्यति।
} उभौ ✓

→ मोहन सोहन से द्रोह करता है।
(i) मोहन: सोहनाय द्रुह्यति।
(ii) मोहन: सोहनम् अभिद्रुह्यति।
} उभौ ✓

7. सूत्र → "नम:स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च"

8. वार्तिक — ※ अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम् ※
(i) नम: → अभिवादन (नमस्ते / नमस्कार)
(ii) स्वस्ति → कल्याण
(iii) स्वाहा → अग्नि के लिए आहुति
(iv) स्वधा → पितरों के लिए आहुति
(v) वषट् / वषड् → देवताओं के लिए आहुति
(vi) अलम् → पर्याप्त

यदि किसी वाक्य में उपर्युक्त शब्दों का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिसके लिए इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उस शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ गुरवे नम:। (गुरु)
→ शिष्येभ्य: स्वस्ति। (शिष्य)
→ अग्नये स्वाहा। (अग्नि)
→ पितृभ्य: स्वधा। (पितृ)
→ इन्द्राय वषट्। (इन्द्र)
→ राम: रावणाय अलम्। (रावण)
→ शिव को अभिवादन। → ॐ नम: शिवाय।
→ गणेश को अभिवादन। श्री गणेशाय नम:।
→ कंस के लिए कृष्ण पर्याप्त है।
कंसाय कृष्ण: अलम्।
→ पहलवान के लिए पहलवान पर्याप्त है।
अलं मल्लो मल्लाय।

नोट → यदि किसी वाक्य में 'अलम्' शब्द के स्थान पर इसके अन्य पर्यायवाची शब्दों (प्रभु:, शक्त:, समर्थ:) का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ पर भी 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। परन्तु 'प्रभु:' शब्द का प्रयोग होने पर 'चतुर्थी' के साथ-साथ 'षष्ठी' का प्रयोग भी किया जा सकता है।

जैसे :- संसार के लिए हरि पर्याप्त है।
→ लोकाय हरि: अलम्। (लोक)
→ लोकाय हरि: शक्त:। (लोक)
→ लोकाय हरि: समर्थ:। (लोक)
→ लोकाय / लोकस्य हरि: प्रभु:। (लोक)
→ जगते हरि: अलम्। (जगत्)
→ जगते हरि: शक्त:। (जगत्)
→ जगते हरि: समर्थ:। (जगत्)
→ जगते / जगत: हरि: प्रभु:। (जगत्)

9. सूत्र → "धारेरुत्तमर्ण:" (धारे: उत्तमर्ण:)
'धृ' धातु → उधार लेना / उधार देना, ऋणदाता

यदि किसी वाक्य में 'धृ' धातु का प्रयोग 'उधार लेना/उधार देना' अर्थ में किया जा रहा हो तो वहाँ 'उत्तमर्ण' (ऋणदाता) वाचक शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ राम श्याम को सौ रुपये उधार देता है।
रामाय श्यामः शतं धारयति।
→ राम श्याम से सौ रुपये लेता है।
रामः श्यामाय शतं धारयति।
→ हरि भक्त के लिए मोक्ष को धारण करते हैं।
हरिः भक्ताय मोक्षं धारयति। (हरि, भक्त)

10. सूत्र → " स्पृहेरीप्सितः "
(स्पृहेः ईप्सितः)
'स्पृह' → चाहना ईप्सित पदार्थ
यदि किसी वाक्य में 'स्पृह' धातु का प्रयोग 'चाहना' अर्थ में किया जा रहा हो तो वहाँ 'ईप्सित' पदार्थ में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है।
'स्पृह' धातु के योग में 'चतुर्थी' के साथ साथ विकल्प से 'द्वितीया' एवं 'षष्ठी' विभक्तियों का भी प्रयोग किया जा सकता है, परन्तु तीनों में से एक का चयन करने की स्थिति उत्पन्न होने पर 'चतुर्थी' विभक्ति को ही प्राथमिकता दी जाती है। जैसे :-
→ कृष्ण फूलों को चाहता है।
कृष्णः .... स्पृहयति।
(A) पुष्पाणि (B) पुष्पेभ्यः (C) पुष्पाणाम् (D) सर्वे
(A) पुष्पाणि (B) पुष्पेभ्यः (C) पुष्पाणाम् (D) पुष्पेषु
→ लता लताओं को चाहती है।
लता लताः / लताभ्यः / लतानां स्पृहयति।
II I III

सूत्र :- [" चतुर्थी तदर्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः "
यूपदारु → यूपाय दारु
कुम्भमृत्तिका → कुम्भाय मृत्तिका:]

11. वार्तिक → ❀ तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या ❀
उद्देश्य
यदि किसी वाक्य में किसी उद्देश्य से कोई कार्य किया जा रहा हो तो वहाँ 'उद्देश्यवाचक' शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ हम यहाँ पढ़ने के लिए आते हैं।
वयम् अत्र पठनाय आगच्छामः।
→ बच्चा दूध के लिए रोता है।
बालकः दुग्धाय रोदिति / क्रन्दति।
→ ब्राह्मण स्तम्भ के लिए लकड़ी लाता है।
ब्राह्मणः यूपाय दारुम् आनयति।
→ कुम्हार घड़े के लिए मिट्टी लाता है।
कुम्भकारः (कुलालः) कुम्भाय मृत्तिकाम् आनयति।

12. वार्तिक → ❀ उत्पातेन ज्ञापिते च ❀
मौसम / प्रकृति — अमंगल सूचक
यदि किसी वाक्य में 'प्रकृति' या 'मौसम' की भविष्यवाणी की जाती है तो वहाँ, जिसकी भविष्यवाणी की जाती है उस 'अमंगल सूचक' शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ " वाताय कपिला विद्युत आतपाय अतिलोहिनी।
पीता वर्षाय विज्ञेया दुर्भिक्षाय सिता भवेत्॥"
अर्थात् भूरे रंग की बिजली 'तेज आँधी' की, अत्यधिक लाल रंग की बिजली 'तेज धूप' की, पीले रंग की बिजली 'तेज वर्षा' की एवं सफेद रंग की बिजली 'दुर्भिक्ष' (अकाल) की सूचक मानी जाती है।

13. सूत्र → " मन्यकर्मण्यनादरे विभाषा अप्राणिषु "
14. वार्तिक → ❀ अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्नशुकशृगाल वर्जेष्विति वाच्यम् ❀

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

यदि किसी वाक्य में किसी का अनादर करने के लिए 'मन्ये' क्रियापद का प्रयोग किया जा रहा है तो वहाँ तुलनावाचक शब्द के रूप में 'नौ (नाव), काक (कौआ), अन्न, शुक, शृगाल (गीदड़)' इन पाँच शब्दों का प्रयोग होने पर तो केवल 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है तथा इन पाँच शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द का प्रयोग होने पर विकल्प से 'द्वितीया' अथवा 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ मैं तुम्हें .....के बराबर भी नहीं मानता हूँ।

(i) अहं त्वां तृणं / तृणाय न मन्ये। (तृण)
(ii) अहं त्वां काकं न मन्ये। (काक)
(iii) अहं त्वां कुक्कुरं / कुक्कुराय न मन्ये। (कुक्कुर)
(iv) अहं त्वा अन्नं न मन्ये। (अन्न)

विशेष नियम → यदि किसी वाक्य में 'कथय् (कहना), आचक्ष् (कहना), निवेदय (निवेदन करना), विसृज् (भेजना)' धातुओं का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे कहा जाता है या निवेदन किया जाता है या भेजा जाता है, उस शब्द में 'चतुर्थी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ मैं तुमसे सत्य कहता हूँ। → अहं तुभ्यं / ते सत्यं कथयामि।
→ ब्राह्मण भक्तों को कथा कहता है / सुनाता है।
ब्राह्मणः भक्तेभ्यः कथाम् आचक्षते।
→ मैं तुमसे निवेदन करता हूँ।
अहं तुभ्यं / ते निवेदयामि।
→ राम ने रावण को (के पास) दूत भेजा।
रामः रावणाय दूतः विसृष्टः।

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

5. पञ्चमी विभक्ति / अपादान कारक

1. अपादान संज्ञा विधायक सूत्र → "ध्रुवमपायेऽपादानम्"

ध्रुवम् → अवधिभूत पदार्थ
अपाये → विश्लेषः / विभागः

जब किसी वाक्य में एक पदार्थ दूसरे पदार्थ से अलग होता है तो वहाँ, जिससे अलग होता है, उस पदार्थ को ही 'ध्रुवम्' या 'अवधिभूत पदार्थ' कहा जाता है एवम् उसी की 'अपादान संज्ञा' मानी जाती है तथा "अपादाने पञ्चमी" सूत्र से अपादान संज्ञक शब्द में 'पञ्चमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
→ मोहन घोड़े से गिर गया।
मोहनः अश्वात् अपतत्।
→ मोहन पर्वत से गिरते हुए घोड़े से गिर गया।
मोहनः पर्वतात् पतितः अश्वात् अपतत्।

⇒ अपादान के भेद ⇒ अपादान के प्रमुखतः दो भेद माने जाते हैं-
(1) चल अपादान → गतिशील पदार्थ
(2) अचल अपादान → स्थिर पदार्थ

जैसे :- → मैं जयपुर से आता हूँ।
अहं जयपुरात् आगच्छामि। (अचल अपादान)
→ रमेश दौड़ते हुए ऊँट से गिर गया।
रमेशः धावतः उष्ट्रात् अपतत्। (चल अपादान)
→ दो मेष एक-दूसरे से दूर भाग रहे हैं।
मेषौ परस्परस्मात् अपसरतः। (चल अपादान)

प्रश्न → .....पत्रं पतति। रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति।
(क) वृक्षात् (ख) वृक्षस्य (ग) वृक्षौ (घ) वृक्षेषु

Scanned by CamScanner

प्रश्न → ...... पत्रं पतति । रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति –
(क) वृक्षात् (ख) वृक्षस्य (ग) वृक्षेण (घ) वृक्षे

नोट → यदि किसी वाक्य में अलग होने के स्थान पर सम्बन्ध वाचक अर्थ प्रकट हो रहा हो तो वहाँ षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

→ वृक्ष से पता गिरता है। → वृक्षात् पत्रं पतति ।
→ वृक्ष का पता गिरता है। → वृक्षस्य पत्रं पतति ।

2. सूत्र → "भीत्रार्थानां भयहेतुः"
(i) भी → डरना
(ii) त्रा → रक्षा करना
(iii) अर्थानाम् → समानार्थी अन्य धातु
रक्ष् → रक्षा करना
भयहेतु → भय का कारण (जिससे डर लगता है)

यदि किसी वाक्य में 'डरना / रक्षा करना' अर्थ को प्रकट करने वाली धातुओं (भी / त्रा / रक्ष्) का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे डरा जाता है / रक्षा की जाती है, उस शब्द में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ बालक सर्प से डरता है।
बालकः सर्पात् बिभेति ।
→ बालक सर्प से डरते हैं।
बालकाः सर्पात् बिभ्यति ।
→ ईश्वर विपत्तियों से बचाता है।
ईश्वरः विपद्भ्यः त्रायते ।
→ द्वारपाल चोरों से रक्षा करता है।
द्वारपालः चौरेभ्यः त्रायते / रक्षति ।

नोट → यदि इस प्रकार के वाक्य में 'डरना / रक्षा करना' क्रियाओं के स्थान को लिखा जाना हो तो उसमें 'सप्तमी' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ बालक जंगल में शेर से डरता है।
बालकः आरण्ये सिंहात् बिभेति ।
→ द्वारपाल महल में चोरों से रक्षा करता है।
द्वारपालः प्रासादे चौरेभ्यः त्रायते / रक्षति ।

3. सूत्र → "भुवः प्रभवः"
'भू' धातु से पहले 'प्र / उद्' आदि उपसर्ग जुड़ जाने पर इसे 'निकलना' अर्थ में ग्रहण किया जाता है एवं यदि किसी वाक्य में इस प्रकार के क्रिया पदों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ निकलने के स्थान वाचक शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ गंगा हिमालय से निकलती है।
गङ्गा हिमालयात् / हिमवतः प्रभवति / उद्भवति ।
→ वृक्ष से पत्ते निकलते हैं।
वृक्षात् पत्राणि प्रभवति / उद्भवति ।

4. सूत्र → "जनिकर्तुः प्रकृतिः"
जन् → निकलना

यदि किसी वाक्य में 'जन्' धातु के क्रियापद का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ उत्पत्ति स्थान वाचक शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ गोबर से बिच्छु उत्पन्न होते हैं।
गोमयात् वृश्चिकाः जायन्ते ।
→ ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है।
ब्रह्मणः प्रजा प्रजायन्ते ।
→ मुख से अग्नि उत्पन्न हुआ।
मुखात् अग्निः अजायत । (मुखादग्निरजायत)

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

प्रश्न – निम्नांकितेषु वाक्येषु विभक्तिःप्रयोग केन सूत्रेण भवति ।
(i) वृक्षात् पत्राणि पतन्ति । ("ध्रुवमपायेऽपादानम्")
(ii) वृक्षात् फलानि उद्भवन्ति । ("भुवः प्रभवः")
(iii) वृक्षात् पत्राणि जायन्ते । ("जनिकर्तुः प्रकृतिः")
(iv) वृक्षस्य पत्राणि पतन्ति । ("षष्ठी शेषे")

5. वार्तिक ❀ जुगुप्सा विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ❀
(i) जुगुप्सा → घृणा करना
(ii) विराम → रुकना / रोकना
(iii) प्रमाद → आलस्य करना
यदि किसी वाक्य में उपर्युक्त तीनों धातुओं को प्रकट करने वाले शब्दों / क्रियापदों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे घृणा की जाती है / रुका जाता है / आलस्य किया जाता है, उस शब्द में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:
→ भक्त पाप से घृणा करता है।
भक्तः पापात् जुगुप्सते ।
→ भक्त पाप से रुकता है।
भक्तः पापात् विरमति ।
→ वह अध्ययन से आलस्य करता है।
सः अध्ययनात् प्रमाद्यते / प्रमाद्यति ।
→ स्वाध्याय से आलस्य मत करो ।
स्वाध्यायान्माप्रमदः (स्वाध्यायात् मा प्रमदः ।)

6. सूत्र :- "पराजेरसोढः"
(पराजेः असोढः)
परा + जि धातु दूर भागना
यदि किसी वाक्य में 'जि' धातु से पहले 'परा' उपसर्ग जुड़ा हुआ हो एवम् उसका अर्थ 'दूर भागना' हो रहा हो तो वहाँ जिससे दूर भगा जाता है, उस शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ वह अध्ययन से दूर भागता है।
सः अध्ययनात् पराजयते ।

नोट → यदि 'जि' धातु से पहले 'परा' उपसर्ग जुड़ा हुआ हो लेकिन उसका अर्थ 'पराजित करना' या 'हराना' प्रकट हो रहा हो तो वहाँ जिसको पराजित किया जाता है, उस शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ राजा शत्रु को पराजित करता है।
राजा शत्रुं पराजयते ।

7. सूत्र → "आख्यातोपयोगे"
(आख्यातु उपयोगे)
सीखना / शिक्षा प्राप्त करना — नियमपूर्वक
यदि हम किसी से नियमपूर्वक विद्या प्राप्त करते हैं तो वहाँ पढ़ाने वाले गुरु वाचक शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :—
→ वह गुरु / शिक्षक / आचार्य / अध्यापक / उपाध्याय से पढ़ता है।
सः गुरोः / शिक्षकात् / आचार्यात् / अध्यापकात् / उपाध्यायात् पठति / अधीते ।

नोट → यदि विद्या सीखने में नियमितता प्रकट नहीं होती है तो वहाँ विद्या सीखने वाले शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ वह नट से गाथा सुनता है।
सः नटस्य गाथां शृणोति ।

8. सूत्र → "पञ्चमी विभक्ते"
यदि किसी वाक्य में दो पदार्थों की तुलना करने के लिए 'तरप्' / 'ईयसुन्' प्रत्यय का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिससे तुलना की जाती है, उस शब्द में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :—

Scanned by CamScanner

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

→ राम श्याम से चतुर है।
राम: श्यामात् पटुतर:/पटीयान्।
→ रमा उमा से सुन्दर है।
रमा उमाया: सुन्दरतरा/सुन्दरीयसी।
→ यह घर उस घर से छोटा है।
इदं गृहं तस्मात् गृहात् लघुतरम्/लघीय:।

9. सूत्र → "पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्"
(i) पृथक् → के बिना
(ii) विना → के बिना
(iii) नाना → के बिना
यदि किसी वाक्य में उपर्युक्त तीनों में से किसी भी शब्द का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ इसके साथ लिखे जाने वाले सम्बन्ध वाचक शब्द में विकल्प से 'द्वितीया/तृतीया/पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे
→ ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है।
ज्ञानं/ज्ञानेन/ज्ञानात् विना/नाना/पृथक् न मुक्ति।

10. सूत्र → "अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति"
(अन्तर्धौ येन अदर्शनम् इच्छति)
छिपना जिससे छिपा जाता है
यदि किसी वाक्य में छिपना अर्थ को प्रकट करने वाले शब्दों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे छिपा जाता है, उस शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है।
→ कृष्ण माता/पिता से छिपता है।
कृष्ण: मातु:/पितु: निलीयते।
→ वह गुरु से छिपती है।
सा गुरो: निलीयते।

Subject ______ Date: __/__/__ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

11. सूत्र → "वारणार्थानामीप्सितम्"
(वारण अर्थानाम् ईप्सितम्)
हटाना
यदि किसी वाक्य में हटाना अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वृ' धातु के क्रियापद का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे हटाया जाता है, उस शब्द में 'पंचमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ किसान खेत में जौ से गाय को हटाता है।
कृषक: क्षेत्रे यवेभ्य: गां/धेनु: वारयति।
→ गुरु शिष्य को आग से हटाता है।
गुरु: शिष्यं अग्ने: वारयति।
→ सच्चा मित्र पाप से हटाता है और हित के कार्यों में लगाता है।
सन्मित्रं पापान्निवारयति योजयते हिताय।

12. सूत्र → "ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च"
(ल्यप् लोपे कर्मणि अधिकरणे च)
यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त 'ल्यप्' प्रत्ययान्त पद को हटाकर पुन: वाक्य लिखा जाना हो तो वहाँ उस वाक्य में प्रयुक्त 'कर्मवाचक/अधिकरण वाचक' शब्द में पंचमी विभक्ति का प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे:-
→ गुरु आसन पर बैठकर देखता है।
(i) गुरु: आसने उपविश्य प्रेक्षते/पश्यति।
(ii) गुरु: आसनात् प्रेक्षते/पश्यति।
→ राजकुमारी महल पर चढ़ कर देखती है।
(i) राजकुमारी प्रासादम् आरुह्य प्रेक्षते/पश्यति।
(ii) राजकुमारी प्रासादात् प्रेक्षते/पश्यति।
→ वह श्वसुर को देखकर परदा करती है।
(i) वधू श्वशुरं वीक्ष्य जिह्रेति।
(ii) वधू श्वशुरात् जिह्रेति।

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

13. सूत्र → "अन्यारादितरर्ते दिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाधेजाहि युक्ते"

(i) अन्य: → भिन्न / अलग
(ii) आरात् → समीप / दूर
(iii) इतर: → भिन्न / अलग
(iv) ऋते → के बिना
(v) दिक् → दिशावाचक शब्द (उत्तर / दक्षिण / पूर्व / पश्चिम)
(vi) अञ्चुर → (क) प्राक् → पहले
(ख) प्रत्येय → पश्चात्
(vii) आच् प्रत्ययान्त पद → दक्षिण + आच् → दक्षिणा → दक्षिण की ओर पास में ही
(viii) आहि प्रत्ययान्त पद → दक्षिण + आहि → दक्षिणाहि → दक्षिण की ओर बहुत दूर

उपर्युक्त सभी शब्दों के योग में इनके साथ लिखे जाने वाले शब्दों में पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ राम से भिन्न → रामात् अन्य: ।
→ कृष्ण से भिन्न → कृष्णात् इतर: ।
→ जंगल के समीप → अरण्यात् आरात् ।
→ जंगल से दूर → अरण्यात् आरात् ।
→ जल के बिना → जलात् ऋते ।
→ गाँव से पूर्व की ओर → ग्रामात् पूर्व: ।
→ गाँव से पहले → ग्रामात् प्राक् ।
→ गाँव के पश्चात → ग्रामात् प्रत्येय ।
→ गाँव से दक्षिण की तरफ पास में ही एक बगीचा है।
ग्रामात् दक्षिणा एकम् उद्यानम् अस्ति ।
→ गाँव से दक्षिण की तरह बहुत दूर एक मन्दिर था।
ग्रामात् दक्षिणाहि एकं मन्दिरम् आसीत् ।

नोट :- (i) 'बिना' के अर्थ में निम्नलिखित विभक्तियाँ प्रयुक्त की जा सकती है -

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

→ जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है।
जलम् अन्तरा जीवनं नास्ति ।
जलम् अन्तरेण जीवनं नास्ति ।
जलं / जलेन् / जलात् नाना जीवनं नास्ति ।
जलं / जलेन् / जलात् विना जीवनं नास्ति ।
जलं / जलेन् / जलात् पृथक् जीवनं नास्ति ।
जलात् ऋते जीवनं नास्ति ।

(ii) 'समीप' के अर्थ में निम्नलिखित विभक्तियाँ प्रयुक्त की जाती है। जैसे:-

→ ग्राम के समीप ।
ग्रामं समया
ग्रामं निकषा
ग्रामात् आरात्

6. षष्ठी विभक्ति / सम्बन्ध कारक

1. सूत्र → "षष्ठी शेषे"

कारक विभक्तियों एवम् उपपद विभक्तियों के सभी नियम पढ लेने के बाद भी यदि कोई बात शेष रह जाती है तो वहाँ षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

व्याख्या

यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त कोई शब्द किसी अन्य शब्द के साथ अपना कोई सम्बन्ध प्रकट करता है, तो जिससे सम्बन्ध स्थापित होता है, उस शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-

→ राजा धोबी को कपड़े देता है।
नृप: रजकस्य वस्त्राणि ददाति है।

Scanned by CamScanner

→ वह नट से गाथा सुनता है।
सः नटस्य गाथां श्रृणोति।
→ यह राम का घोड़ा है।
अयं रामस्य अश्वः अस्ति।
→ यह राधा की गाय है।
इयं राधायाः धेनुः अस्ति।
→ यह रमेश का घर है।
इदं रमेशस्य गृहम् अस्ति।

2. सूत्र → "षष्ठी हेतु प्रयोगे"
यदि किसी वाक्य में हेतु शब्द का प्रयोग किया जाना हो तो वहाँ उस 'हेतु' शब्द में एवम् उसके साथ लिखे जाने वाले सम्बन्ध वाचक संज्ञा शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ हम पढ़ने हेतु यहाँ आते हैं।
वयं पठनस्य हेतोः अत्र आगच्छाम।
→ वह अन्न के हेतु यहाँ रहता है।
सः अन्नस्य हेतोः अत्र वसति।
→ "एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं,
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्॥"
कालिदास द्वारा रचित रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग (सिंह-दिलीप संवाद) से गृहित इस पद में 'हेतु' शब्द के प्रयोग के कारण 'अल्पस्य हेतोः' पद में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया गया है।

3. सूत्र → "सर्वनाम्नस्तृतीया च"
यदि किसी वाक्य में हेतु 'शब्द के साथ कोई सर्वनाम शब्द लिखा जाना हो तो वहाँ उस 'हेतु' शब्द में एवं

सर्वनाम शब्द में अर्थात दोनों में विकल्प से षष्ठी विभक्ति अथवा तृतीया विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ तुम किस हेतु यहाँ रहते हो?
(i) त्वं कस्य हेतोः अत्र वससि?
(ii) त्वं केन हेतुना अत्र वससि?

4. वार्तिक - ❀ निमित्त पर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम् ❀
यदि किसी वाक्य में 'हेतु' शब्द के पर्यायवाची 'निमित्त' शब्द का प्रयोग किया जाना हो तो वहाँ 'निमित्त' शब्द के साथ सर्वनाम शब्द होने पर तो सभी विभक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है एवं निमित्त शब्द के साथ संज्ञा शब्द होने पर 'प्रथमा' एवं 'द्वितीया' को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसे:-
→ तुम किस निमित्त यहाँ रहते हो?
त्वं किं निमित्तं अत्र वससि? (प्रथमा)
त्वं किं निमित्तं अत्र वससि? (द्वितीया)
त्वं केन निमित्तेन अत्र वससि? (तृतीया)
त्वं कस्मै निमित्ताय अत्र वससि? (चतुर्थी)
त्वं कस्मात निमित्तात् अत्र वससि? (पंचमी)
त्वं कस्य निमित्तस्य अत्र वससि? (षष्ठी)
त्वं कस्मिन निमित्ते अत्र वससि? (सप्तमी)

→ मैं अन्न के निमित्त यहाँ रहता हूँ।
अहं अन्नेन निमित्तेन अत्र वसामि। (तृतीया)
अहं अन्नाय निमित्ताय अत्र वसामि। (चतुर्थी)
अहं अन्नात निमित्तात् अत्र वसामि। (पंचमी)
अहं अन्नस्य निमित्तस्य अत्र वसामि। (षष्ठी)
अहं अन्ने निमित्ते अत्र वसामि। (सप्तमी)

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

5. सूत्र → "दिवस्तदर्थस्य"
(i) दिव् → जुआ खेलना
(ii) अर्थस्य → राशि
यदि किसी वाक्य में 'दिव्' धातु का प्रयोग जुआ खेलने के अर्थ में हो रहा हो तथा वहाँ जितनी राशि का जुआ खेला जाता है, उस राशि वाचक शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ वह सौ रुपये का जुआ खेलता है।
सः शतस्य दीव्यति।
→ वह हजार रुपये का जुआ खेलता है।
सः सहस्रस्य दीव्यति।
नोट → यदि 'दिव्' धातु का प्रयोग 'चमकाना / प्रशंसा करना' अर्थ में हो रहा हो तो वहाँ जिसकी प्रशंसा की जाती है, उस शब्द में 'द्वितीया' विभक्ति ही प्रयुक्त होती है।
→ वह ब्राह्मण की प्रशंसा करता है।
सः ब्राह्मणं दिव्यति।

6. सूत्र → "विभाषोपसर्गे"
(विभाषा उपसर्ग)
यदि 'दिव्' धातु से पहले कोई उपसर्ग जुड़ा हुआ हो तो वहाँ राशि वाचक शब्द में विकल्प से 'द्वितीया' अथवा 'षष्ठी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-
प्रश्न → 'सः ..... दीव्यति।' रिक्तस्थानपूर्तये उचित पदमस्ति —
(A) शतं (B) शतस्य (C) उभौ (D) उभाविव न
प्रश्न → सः ..... प्रतिदीव्यति।' रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति —
(A) शतं (B) शतस्य (C) उभौ (D) उभाविव न

7. सूत्र → "कर्तरि कृति"
कृत प्रत्ययान्त पद
यदि किसी वाक्य में कोई कृत प्रत्ययान्त पद प्रयुक्त हो

Subject _____ Date: __/__/____ MON TUE WED THR FRI SAT SUN

रहा हो तो वहाँ उसके साथ लिखे जाने वाले कर्ता या कर्म वाचक शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है।
→ कालिदासस्य कृतिः।
कर्ता कृ + क्तिन् प्रत्यय
→ पुस्तकस्य पठनम्।
कर्म पठ् + ल्युट् प्रत्यय
→ बालकस्य रोदनम्।
कर्ता रुद् + ल्युट् प्रत्यय
→ जलस्य ग्रहीता।
कर्म ग्रह् + तृच् प्रत्यय

8. सूत्र → "उभयप्राप्तौ कर्मणि"
यदि किसी वाक्य में प्रयुक्त किसी कृत प्रत्ययान्त पद के साथ कर्ता एवं कर्म दोनों एक साथ लिखे जाने हो तो वहाँ केवल कर्म वाचक पद में ही 'षष्ठी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। कर्ता को 'प्रथमा' विभक्ति में ही लिखा जाता है। जैसे :-
→ परमेश्वर संसार का कर्ता है।
परमेश्वरः कर्ता जगतः / संसारस्य
(कर्ता-प्रथमा) (कृ+तृच्) (कर्म षष्ठी)

9. सूत्र → "गुणकर्मणि द्वितीया"
यदि कोई कृत प्रत्ययान्त पद द्विकर्मक धातुओं से बना हुआ होता वहाँ प्रधान कर्म में तो षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है परन्तु गौण कर्म में विकल्प से द्वितीया या षष्ठी दोनों विभक्तियाँ प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ घोड़े को शीघ्र देश में ले जाने वाला।
नेता अश्वस्य शीघ्रं / शीघ्रस्य
नी + तृच् प्रधान कर्म गौण कर्म

Scanned by CamScanner

10. सूत्र → "न लोकाव्ययनिष्ठा खलर्थतृनाम्"

न / ल / उ / उक / अव्यय / निष्ठा / खलर्थ / तृन
शतृ/शानच् | उ | उक | क्त्वा/तुमुन्/ल्यप् | क्त/क्तवतु | कर | तृन

कृत प्रत्ययान्त पदों में यदि कोई पद (शतृ / शानच् / उ / उक / क्त्वा / तुमुन् / ल्यप् / क्त / क्तवतु / कर / तृन) प्रत्ययों से बना हुआ हो तो वहाँ उनके साथ लिखे जाने वाले कर्ता या कर्म वाचक शब्द में षष्ठी का प्रयोग नही किया जाता है, ऐसे पदों में निम्नानुसार विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। यथा –

प्रत्यय	कर्ता	कर्म
क्त / कर	तृतीया	प्रथमा
अन्य प्रत्यय	प्रथमा	द्वितीया

→ ओदनं पचन्। (पच् + शतृ)
→ ओदनं पचमानः। (पच् + शानच्)
→ अन्नं बुभुक्षुः। (बुभुक्षा + उ)
→ दैत्यान् घातुकः हरिः। (हन् + उक)
→ पुस्तकं पठितुम् / पठित्वा / संपठ्य।
→ हरिणा हताः दैत्याः। (हन् + क्त)
→ ईषत्करः प्रपञ्चः हरिणा। (ईषत् + कर)
→ वदिता जनापवादान्। (वद + तृन)
→ हरिः हतवान् दैत्यान्। (हन् + क्तवतु)

11. सूत्र → "अधीगर्थदयेशां कर्मणि"

(i) इक् धातु → स्मरण करना / याद करना
(ii) समानार्थी (स्मृ → स्मरण / याद करना)
(iii) दय् → दया करना / उपयोग करना
(iv) ईश् → शासन करना

यदि किसी वाक्य में उपर्युक्त धातुओं से बने हुए क्रियापदों का प्रयोग हो रहा है तो वहाँ कर्मवाचक शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ पुत्र माता को याद करता है।
पुत्रः मातुः अध्येति / स्मरति।
→ राम रमा पर दया करता है।
रामः रमायाः दयते।
→ वह घी का उपयोग करता है।
सः घृतस्य / सर्पिषः दयते।
→ ईश्वर संसार पर शासन करता है।
ईश्वरः संसारस्य / जगतः ईष्टे।
→ सीता पिता को याद करती है।
सीता पितुः अध्येति / स्मरति।

नोट → यदि 'अधि + इक्' धातु / 'स्मृ' धातु का प्रयोग सीखना अर्थ में हो रहा हो तो वहाँ कर्मवाचक शब्द में द्वितीया विभक्ति ही प्रयुक्त होती है। जैसे :-
→ वह पाठ को याद करता है।
सः पाठं स्मरति / अध्येति।

12. सूत्र → "कृत्यानां कर्तरि वा"

यदि किसी वाक्य में सातों कृत्य प्रत्ययों (तव्य / तव्यत् / अनीयर् / केलिमर् / यत् / ण्यत् / क्यप्) से बने हुए पद का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ उसके साथ लिखे जाने वाले कर्ता वाचक शब्द में विकल्प से 'तृतीया' अथवा 'षष्ठी' दोनों विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं। जैसे :-
→ हमें गरीबों की सेवा करनी चाहिए।
अस्माभिः / अस्माकं दीनाः सेवितव्याः / सेवनीयाः
→ तुम्हें ज्ञानामृत पीना चाहिए।
त्वया / तव ज्ञानामृतं पेयम्।

13. सूत्र → "षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन"

यदि किसी वाक्य में 'तस्' प्रत्ययान्त पदों (दक्षिण+तस् →

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

सहयोग → द्वितीया विभक्ति
निकषा → द्वितीया विभक्ति
समीपे → षष्ठी विभक्ति
अन्तिकम् → पंचमी / षष्ठी विभक्ति

→ निकट / पास में / समीप

दक्षिणतः / उत्तरतः / पश्चिमतः अथवा अधः / अधस्तात् / पूर्वः / पुरस्तात् / उपरि / उपरिष्टात् / अग्रे / मध्ये / समीपे / सम्मुखे इत्यादि शब्दों) का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ इनके साथ लिखे जाने वाले शब्द में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ गाँव से दक्षिण की ओर एक सुन्दर बगीचा है।
ग्रामस्य दक्षिणतः एकं रम्यम् उद्यानम् अस्ति ।

→ नगर से उत्तर की ओर एक विशाल मन्दिर था।
नगरस्य उत्तरतः एकं विशालं मन्दिरम् आसीत् ।

→ पेड़ के नीचे पशु हैं।
वृक्षस्य अधः / अधस्तात् पशवः सन्ति ।

→ विद्यालय के सामने लोग हैं।
विद्यालयस्य पुरतः / पूर्वः / पुरस्तात् / समक्षं / अग्रे जनाः सन्ति ।

→ विद्यालय के समीप एक विशाल वटवृक्ष था ।
विद्यालयस्य समीपे एकः विशालः वटवृक्षः आसीत् ।

→ यह पुस्तक राम के लिए है।
इदं पुस्तकं रामस्य कृते अस्ति ।

14. सूत्र → "दूरान्तिकार्थैः षष्ठ्यन्यतरस्याम्"

15. सूत्र → "दूरान्तिकार्थेभ्यः द्वितीया च"
यदि किसी वाक्य में 'दूर / अन्तिक' शब्दों का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिस स्थान से दूरी / समीपता प्रकट की जाती है, उस स्थान वाचक शब्द में तो पंचमी / षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है एवं दूर / अन्तिक शब्द में विकल्प से द्वितीया / तृतीया / पंचमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ नगर से दूर ।
नगरात् / नगरस्य दूरं / दूरेण / दूरात् ।

→ गाँव के समीप । → ग्रामात् / ग्रामस्य अन्तिकं / अन्तिकेन / अन्तिकात् ।

16. सूत्र → "चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्रकुशलसुखार्थहितैः"
यदि किसी को आशीर्वाद देने के लिए 'आशिष / मद्र / भद्र / कुशल / सुख / हित' शब्दों का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिसको आशीर्वाद दिया जाता है, उस शब्द में विकल्प से चतुर्थी अथवा षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ पुत्र को आशीष ।
पुत्राय / पुत्रस्य आशिष्यं / आयुष्यं / मद्रं / भद्रं / कुशलं / हितं भवेत ।

7. सप्तमी विभक्ति / अधिकरण कारक

1. अधिकरण संज्ञा विधायक सूत्र → "आधारोऽधिकरणम्"
किसी भी क्रिया के घटित होने के स्थान या समय को आधार कहते हैं एवम् उस आधार को ही अधिकरण संज्ञा मानी जाती है तथा "सप्तम्यधिकरणे च" सूत्र से अधिकरण संज्ञक शब्द में सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।
आधार के भी तीन उपभेद माने जाते हैं —

(1) औपश्लेषिक आधार → कुछ समय तक का ही जुड़ाव होने पर ।
(2) अभिव्यापक आधार → सदा-सदा का ही जुड़ाव होने पर ।
(3) वैषयिक आधार → किसी विषय विशेष का उल्लेख होने पर।

जैसे :- → हम कक्षा में बैठते हैं।
वयं कक्षायां तिष्ठामः । (औपश्लेषिक आधार)

→ मैं सुबह पढ़ता हूँ ।
अहं प्रातःकाले पठामि । (औपश्लेषिक आधार)

→ दूध में घी होता है। (अभिव्यापक आधार)
दुग्धे / पयसि घृतं भवति ।

→ मेरी गणित में रुचि है।
मम गणिते रुचिः। (वैषयिक आधार)
→ वह पतीली में भोजन पकाती है।
सा स्थाल्यां ओदनं पचति। (औपश्लेषिक आधार)
→ उसकी मोक्ष में इच्छा है।
तस्य मोक्षे इच्छा अस्ति। (वैषयिक आधार)
→ तिलों में तेल होता है।
तिलेषु तैलं भवति। (अभिव्यापक आधार)
→ सभी में आत्मा होती है।
सर्वस्मिन्/सर्वेषु आत्मा भवति। (अभिव्यापक आधार)

2. सूत्र → "यस्य च भावेन भावलक्षणम्"
यदि किसी वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होने पर कोई दूसरी क्रिया सम्पन्न होती है, तो वहाँ प्रथम समाप्त क्रिया में एवम् उसके कर्ता में 'सप्तमी' विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ राम के वन में जाने पर दशरथ ने प्राण त्यागे।
रामे वनं गते सति दशरथः प्राणान् अत्यजत्।
→ सूर्य के उदय होने पर कमल खिलते हैं।
सूर्ये उदिते सति कमलानि विकसन्ति।
→ सूर्य के अस्त होने पर हम घर जाते हैं।
सूर्ये अस्ते सति वयं गृहं गच्छामः।

नोट → इस सूत्र के अनुसार प्रयुक्त होने वाली सप्तमी विभक्ति को 'सति सप्तमी' अथवा 'भाव सप्तमी' के नाम से जाना जाता है।

3. सूत्र → "यतश्च निर्धारणम्"
यदि किसी वाक्य में जाति/गुण/क्रिया/संज्ञा के आधार पर अनेक पदार्थों में से किसी एक पदार्थ को

अलग किया जाना हो तो वहाँ जिससे अलग किया जाता है, उस शब्द में षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:
→ बालकों में राम श्रेष्ठ है।
बालकानां/बालकेषु रामः श्रेष्ठः/प्रशस्यतमः।
→ गायों में काली गाय अधिक दूध देती है।
गवां/गोषु/धेनूनां/धेनुषु कृष्णा बहुक्षीरा।
→ चलते हुओं में दौड़ने वाला शीघ्र पहुँचता है।
गच्छतां/गच्छत्सु धावन् शीघ्रम्।
→ मनुष्यों में ब्राह्मण सर्वपूज्य है।
नृणां/नृषु ब्राह्मणाः सर्वपूज्याः/पूज्यतमाः।
→ घोड़ों में सफेद घोड़ा अधिक घास खाता है।
अश्वानां/अश्वेषु श्वेतः बहुग्रासः।
→ कवियों में कालिदास सबसे महान् है।
कवीनां/कविषु कालिदासः महत्तमः/महिष्ठः।

4. सूत्र → "षष्ठी चानादरे"
यदि किसी वाक्य में किसी का अनादर करने का भाव प्रकट हो रहा हो तो वहाँ जिसका अनादर किया जाता है, उस शब्द में तथा उसके द्वारा सम्पादित की जाने वाली क्रिया में विकल्प से षष्ठी अथवा सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे:-
→ पुत्र पिता को रोता हुआ छोड़कर विदेश चला गया।
पुत्रः पितुः रुदतः/पितरि रुदति विदेशं गतः।
→ माता शिशु को रोता हुआ छोड़कर बाजार चली गई।
माता शिशोः रुदतः/शिशौ रुदति आपणं गता।

5. वार्तिक- "साध्वसाध्वुप्रयोगे च"
(i) साधु → सज्जन
(ii) असाधु → दुर्जन/असज्जन

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner

यदि किसी वाक्य में साधु / असाधु शब्द का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिसके प्रति सज्जनता या असज्जनता प्रकट की जाती है, उस शब्द में सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ कृष्ण माता के प्रति सज्जन व मामा के प्रति असज्जन है।
कृष्णः मातरि साधुः मातुले असाधुः च ।

6. सूत्र → " आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम् "
(i) आयुक्तः → संलग्न होना / लगा होना
(ii) कुशलः → पटु / प्रवीण / दक्ष

यदि किसी वाक्य में 'आयुक्त / कुशल' शब्दों का प्रयोग हो रहा हो वहाँ जिस कार्य में संलग्नता / कुशलता प्रकट होती है, उस कार्यवाचक शब्द में विकल्प से षष्ठी / सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ वह पढ़ने में लगा हुआ है।
सः पठनस्य / पठने आयुक्तः ।
→ पुजारी हरिपूजन में कुशल है।
पूजकः हरिपूजनस्य / हरिपूजने कुशलः ।

7. सूत्र → " प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया च "
(i) प्रसित → तत्पर होना
(ii) उत्सुक → उत्सुक / इच्छुक होना

यदि किसी वाक्य में प्रसित / उत्सुक शब्दों का प्रयोग किया जा रहा हो तो वहाँ जिस कार्य में तत्परता या उत्सुकता प्रकट होती है, उस कार्यवाचक शब्द में विकल्प से तृतीया अथवा सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे-

→ वह अध्ययन में तत्पर है।
सः अध्ययनेन / अध्ययने प्रसितः ।
→ वह ईश्वर के प्रति उत्सुक है।
सः ईश्वरे / ईश्वरेण उत्सुकः ।

8. वार्तिक - क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसङ्ख्यानम्
(क्तस्य इन विषयस्य कर्मणि उपसङ्ख्यानम्)

यदि किसी क्त प्रत्ययान्त पद के साथ इन् प्रत्यय भी जोड़ दिया गया हो तो वहाँ कर्मवाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ व्याकरण को पढ़ा हुआ ।
(i) अधीतः व्याकरणम् । → क्त प्रत्ययान्त ⇒ द्वितीया
(ii) अधीती व्याकरणे । → क्त प्रत्ययान्त + इन् ⇒ सप्तमी

9. वार्तिक - निमित्तात् कर्मयोगे

यदि किसी वाक्य में किसी निमित्त से (किसी वस्तु को प्राप्त करने की इच्छा से) कोई कार्य किया जाता है तो वहाँ उस निमित्त वाचक शब्द में सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

→ " चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ।
केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः ॥"

अर्थात् वह चमड़ी के लिए बघेरे को मारता है, दान्तों के लिए हाथी को मारता है, केशों के लिए चमरी गाय को मारता है तथा अण्डकोष के लिए कस्तूरी मृग को मारता है।

प्रश्न ⇒ "........ दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति ।" रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति -
✓(A) सः (B) तौ (C) ते (D) अहम्

⇒ विशेष नियम ⇒ यदि किसी वाक्य में स्नेह / प्रेम / अनुराग / विश्वास / श्रद्धा इत्यादि शब्दों का अथवा इनके अर्थ को प्रकट करने वाले क्रियापदों का प्रयोग हो रहा हो तो वहाँ जिससे स्नेह किया जाता है / जिस पर विश्वास किया जाता है / जिसके प्रति श्रद्धा होती है, उस शब्द में सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे :-

Scanned by CamScanner

Subject _____

MON TUE WED THR FRI SAT SUN

→ माता पुत्र से स्नेह करती है और पिता पुत्री से स्नेह करता है।
माता पुत्रे स्निह्यति पिता च पुत्र्यां स्निह्यति।

→ राम रमा पर अनुरक्त है।
रामः रमायां अनुरक्तः।

→ वह मुझ पर विश्वास नहीं करती है, परन्तु मैं इस पर विश्वास करता हूँ।
सा मयि न विश्वासिति/प्रत्येति परन्तु अहं तस्यां विश्वसिमि/प्रत्येमि।

→ उसकी ईश्वर के प्रति श्रद्धा है।
तस्या ईश्वरे श्रद्धा अस्ति।

प्रश्न → "अहं ..... न प्रत्येमि।" रिक्तस्थानपूर्तये उचितपदमस्ति—
(A) हरिः (B) हरिम् (C) हरेः (D) हरौ

www.missiongovtexam.com

Scanned by CamScanner